NEERAJ®

हिंदी उपन्यास

B.H.D.C.-109

B.A. Hindi (Hons.) - 4th Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Rajesh Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिंदी उपन्यास

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-4

Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1-3

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-3

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिंदी उपन्यास का स्वरूप-विकास और 'निर्मला'

1. हिंदी उपन्यास : स्वरूप और विकास 1

2. प्रेमचंद का परिचय और उनके उपन्यास 18

3. 'निर्मला' : कथावस्तु 27

4. 'निर्मला' : चरित्र चित्रण 41

5. 'निर्मला' परिवेश और संरचना-शिल्प 54

'त्यागपत्र' और 'मानस का हंस'

6. जैनेन्द्र और उनके उपन्यास 70

7. 'त्यागपत्र' की अंतर्वस्तु और संरचना-शिल्प 80

8. 'त्यागपत्र' के चरित्र 88

9. अमृतलाल नागर और उनके उपन्यास 95

10. 'मानस का हंस' का औपन्यासिक शिल्प 105

11. 'मानस का हंस' के चरित्र 115

12. 'मृगनयनी' का कथानक और प्रतिपाद्य 125

'मृगनयनी' और 'आपका बंटी'

13. 'मृगनयनी' के चरित्र 133

14. 'मृगनयनी' का परिवेश और संरचना-शिल्प 140

15. मन्नू भंडारी के उपन्यास और 'आपका बंटी' 147

16. 'आपका बंटी' के चरित्र 157

17. 'आपका बंटी' का परिवेश और संरचना-शिल्प 166

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी उपन्यास

B.H.D.C.-109

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

भाग-I

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए–

(क) मैं आज इसी पर आश्चर्य किया करता हूँ कि 'लोग क्या समझेंगे', इसका बोझ अपने ऊपर लेकर हम क्यों अपनी चालाकी को सीधा नहीं रखते हैं, क्यों उसे तिरछा आड़ा बनाने की कोशिश करते हैं। लोगों के अपने मुँह हैं, अपनी समझ के अनुसार वे कुछ-कुछ क्यों न कहेंगे? इसमें उनको क्या बाधा है, उन पर किसी का क्या आरोप हो सकता है? फिर भी उस सबका बोझ आदमी अपने ऊपर स्वीकार कर अपने भीतर के सत्य को अस्वीकार करता है–यह उसकी कैसा भारी मूर्खता है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश जैनेंद्र रचित उपन्यास 'त्यागपत्र' से लिया गया है। प्रमोद अपनी बुआ मृणाल से मिलने जाता है। वह समाज में तिरस्कृत होकर एक ऐसे स्थान पर रह रही है, जहां समाज के सम्मानित लोगों का जाना उचित नहीं लगता। मृणाल प्रमोद से कहती है कि यहां मत आना, तेरा आना ठीक नहीं होगा। ये शब्द सुनकर प्रामेद के मन में विचारों का द्वंद्व चलने लगता है, वह सोचने लगता है।

व्याख्या–जीवन में हम इस बोझ को लेकर जीते हैं कि लोग क्या कहेंगे। इस सोच को लेकर हम अपने जीवन को और अधिक उलझा लेते हैं। संसार में सभी लोगों की अपनी-अपनी समझ हैं, वे सभी अपने अनुसार कुछ-न-कुछ कहते हैं। उनके बोलने पर उन पर कोई आरोप भी नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि हर व्यक्ति को अपनी समझ के अनुसार कहने की स्वतंत्रता है। किंतु कोई व्यक्ति लोगों की अपनी मानसिकता के अनुसार कही गई बातों का बोझ लेकर जीता है और अपने मन की सच्चाई को अस्वीकार करना सबसे बड़ी मूर्खता है।

विशेष–1. वैचारिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति है।

2. समाज के सभी लोगों की बात मानकर जीने की मानसिकता पर व्यंग्य है।

3. भाषा विचारशील है।

4. आत्मपरक शैली है।

(ख) काम कम होता है, हुल्लड़ अधिक। जरा-जरा-सी बात पर घण्टों तर्क-वितर्क होता है और अंत में वकील साहब को आकर निर्णय करना पड़ता है। एक कहता है, यह घी खराब है, दूसरा कहता है, इससे अच्छा बाजार में मिल जाये तो टाँग की राह से निकल जाऊँ। तीसरा कहता है, इसमें तो हीक आती है। चौथा कहता है, तुम्हारी नाक की सड़ गई है, तुम क्या जानो घी किसे कहते हैं।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' से लिया गया है। बाबू उदयभानुलाल की बेटी का विवाह है। घर में विवाह से संबंधित कार्य चल रहे हैं। मेहमानों से घर भरा हुआ है। ऐसी स्थिति में लोग काम करते हैं और कमियां अधिक निकालते हैं। इसी स्थिति को उदाहरण के माध्यम से समझाने का प्रयास इन पंक्तियों में किया गया है।

व्याख्या–विवाह एवं अन्य उत्सवों के समय घर में बहुत काम होते हैं और संबंधी-नातेदारों से घर भरा रहता है। सभी लोग काम में हाथ बंटाने का दावा करते हैं, किंतु इस सबमें काम कम होता है, हल्ला ज्यादा मचता है। अतिथि छोटी-छोटी बात पर बहुत समय तक तर्क-वितर्क कर समय नष्ट करते हैं और काम में बाधा डालते हैं। वकील साहब के घर भी ऐसा ही हो रहा था। वकील साहब बीच में आकर निर्णय कर रहे थे, ताकि शांति बनी रहे और विवाह के कार्य भी चलते रहे। यदि एक अतिथि ने यह कह दिया कि घी खराब है, तो दूसरा अतिथि घी की प्रशंसा करते हुए पहले को चुनौती दे डालता है। तभी तीसरा घी में से दुर्गंध आने की बात कहकर विवाद को और बढ़ा देता है। इस पर अन्य अतिथि हीक की बात कहने वाले की नाक खराब होने और उसे घी की पहचान न होने की बात कहकर बात को उलझा देता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

विशेष–1. भाषा व्यंग्यात्मक है।

2. भारतीय समाज में विवाह के समय का परंपरागत एवं यथार्थ चित्रण है।

3. भाषा बोलचाल की है।

4. मिश्रित शब्दावली है।

(ग) उस दिन आँखें बार-बार द्वार की ओर दौड़ती रहीं पर मोहिनी न आई। लोगों के आग्रह से उन्होंने मीरा और कबीर के भजन गाए पर आज उन्हें गायन में सुख न मिला। तुलसी के कंठ में विरह-पीड़ा व्याल-सी लिपटी थी। भक्त मंडली सुनकर आत्मविभोर हो गई, परंतु मेघा भगत ने स्वगत भाव से केवल इतना ही कहा–'हे राम, नारी के विरह में जैसी टीस कामी के कलेजे में उठती है, वैसी ही मेरे कलेजे में भी अपने लिए भर दो।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश अमृतलाल नागर के 'मानस के हंस' उपन्यास से उद्धृत है। नगर कोतवाल की रक्षिता मोहिनी आश्रम में गाने के लिए आती है। तुलसीदास उस पर आसक्त हो जाते हैं। एक दिन मोहिनी आश्रम में नहीं आती, तो तुलसीदास व्याकुल हो जाते हैं। उनकी इसी मनोदशा का वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है। तुलसी की मनोदशा जानकर मेघा भगत जो कहते हैं, उससे तुलसी का मोह-बंधन टूटता है और वे ईश्वर भक्ति में रम जाते हैं।

व्याख्या–मोहिनी के आश्रम में न आने पर तुलसीदास का मन बेचैन हो जाता है। वे बार-बार द्वार की ओर देखते रहते हैं। उनका मन भजन गाने का नहीं करता, किंतु लोगों के आग्रह पर वे मीरा और कबीर के भजन गाने लगते हैं, किंतु उन्हें सुख नहीं मिल रहा था। तुलसी के कंठ व मानों विरह की पीड़ा नागिन-सी लिपटी थी। उनके भजन सुनकर भक्त मंडली अत्यंत आनंदमग्न हो गई। किंतु तुलसी की इस दशा से मेघा भगत व्याकुल हो गए। उन्होंने अपने मन में केवल इतना ही कहा कि हे भगवान राम जैसी पीड़ा एक कामी के मन में प्रिय के विरह में उठती है, वैसी पीड़ा मेरे मन अपनी भक्ति के लिए भर दो।

विशेष–1. भाषा वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक है।

2. विरह की पीड़ा का वर्णन है।

3. मोह ईश्वर भक्ति से विमुख कर देता है, इस भाव का वर्णन है।

(घ) ऊँघती लहराती बालों को किसी कागज पर उतार लिया जाये। पहाड़ों की ऊँचाइयों को एक स्थल पर क्यों न इकट्ठा कर लूँ? बड़े-बड़े पेड़ों के वन्दनवार बना लिये जायें और डालियों-पत्तों के साजों के झरोखे। उनमें से चाँदी की कड़ियों वाली लहरों को नाचता हुआ देखा जाये और फिर गाऊँ–जाग परी मैं पिय के जगाये–लहरें चाँदी और मोतियों के हार से पहने हुए इठलाती हुई नाचती रहेंगी, वन्दनवार सदा हरे रहेंगे, पत्तों की झिलमिलियाँ निरन्तर चांदनी की भीगी हुई चमक और फूलों की महक से लदी रहेंगी।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास 'मृगनयनी' से उद्धृत है। निन्नी अर्थात मृगनयनी खेतों में रात के समय अपने भाई अटल के साथ रखवाली कर रही है। अटल सो रहा है। धीरे-धीरे सारा वातावरण भी शांत हो जाता है। चांदनी रात का मनोरम दृश्य निन्नी के मन में सौंदर्य एवं काव्यात्मक भाव जगा देता है। वह उस वातावरण से एक प्रेमपूर्ण दृश्य की कल्पना करने लगती है।

व्याख्या–वह सोचने लगती है कि खेतों में ऊँघती लहराती बालियों को किसी कागज पर उतार लूँ। साथ ही सामने दिख रही पहाड़ की चोटियों को एक ही स्थान पर इकट्ठा कर दूँ। बड़े-बड़े वृक्षों की वंदनवार और डालियों-पत्तों को झरोखे बना लूँ। फिर उन झरोखों से चांदनी से चमकती नदी की लहरों को नाचते हुए देखूँ और अपना प्रिय गीत–जाग परी मैं प्रिय के जगाये–गाऊँ। गीत सुनकर चांदनी पड़ती मोतियों के हार से चमकती लहरें इठलाकर नाचती रहेंगी। पेड़ों से बने वंदनवार सदैव हरे रहेंगे। पेड़ों के पत्तों की चांदनी से भीगी झिलमिल चमक तथा फूलों की महक सदैव बनी रहेगी।

विशेष–1. भाषा काव्यात्मक है तथा वातावरण का चित्रात्मक वर्णन है।

2. वातावरण का हृदय पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इसका मनोरम वर्णन है।

(ङ) एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था और वह हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन-एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था। आज जैसे एकाएक वह उसके अन्तिम छोर पर आ गई है। पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेल दिये जाने की विवश कचोट-भर है। पर कैसा है कि यह छोर? न प्रकाश, न वह खुलापन, न मुक्ति का एहसास।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश मन्नू भंडारी रचित उपन्यास 'आपका बंटी' से उद्धृत है। यह उपन्यास आधुनिक महानगरीय जीवन में दांपत्य जीवन की टूटन पर आधारित है, जिसमें पति-पत्नी का अलगाव बच्चों के जीवन को बहुत गहरे प्रभावित करता है और उनके मन-मस्तिष्क को तोड़कर रख देता है। ऐसी ही स्थिति से गुजरती उपन्यास की नायिका अपने दांपत्य जीवन में हुए अलगाव के बारे में सोच रही है।

व्याख्या–वह अपने वैवाहिक जीवन के बारे में सोचती है वह उसके जीवन का एक अध्याय था, जो समाप्त हो गया अर्थात् उसका वैवाहिक जीवन समाप्त हो गया। वह सोचती है कि उसके जीवन के ये दस वर्ष किसी अंधेरी गुफा में चलते रहने के समान थे अर्थात् उसके दाम्पत्य जीवन में कोई खुशी, कोई आशा नहीं थी। आज जीवन का यह दौर भी समाप्त होने को है, किन्तु इस मुकाम पर भी पहुंचकर वह खुश नहीं है अर्थात् जीवन के जिस समय में परेशानी थी। उस परेशानी से छुटकारा मिलने के क्षण में भी संतोष

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

हिंदी उपन्यास

हिंदी उपन्यास का स्वरूप-विकास और 'निर्मला'

हिंदी उपन्यास : स्वरूप और विकास

1

परिचय

हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं है। उपन्यास लेखन का प्रारंभ 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक से माना जाता है। भारतेन्दु से पूर्व उपन्यासकारों में श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 1877 ई. में 'भाग्यवती' उपन्यास की रचना की, परंतु भारतेन्दु युग से ही उपन्यास लेखन की परंपरा शुरू हो चुकी थी। लाला श्रीनिवासदास के उपन्यास 'परीक्षा गुरु' (1882) को रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी का पहला उपन्यास माना है। हिंदी उपन्यास विधा में प्रारंभ में तिलिस्मी, जासूसी, ऐय्यारी में उपन्यासों की कथावस्तु रही है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने उपन्यास विधा में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में पहले आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनाया। उसके बाद उन्होंने अपने उपन्यासों की कथावस्तु को यथार्थवादी धरातल पर लाकर खड़ा किया।

अध्याय का विहंगावलोकन

उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य

उपन्यास विधा एक ऐसी विधा है, जिसका कथाक्षेत्र काफी विस्तृत होता है। उपन्यास की कथावस्तु का ताना-बाना सामाजिक जीवन से जुड़ा होता है। उपन्यास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है–'उप' अर्थ पास और 'न्यास' अर्थात रखना। इस प्रकार उपन्यास शब्द का अर्थ हुआ 'पास रखी हुई वस्तु'। साहित्य समाज का दर्पण होता है। रचनाकार अपने आस-पास जो कुछ देखता है, उसे अनुभव करता है और अपनी कल्पना के माध्यम से अपनी लेखनी से अपनी रचना में उकेर देता है। हमारे आस-पास के जीवन से जुड़ी कथावस्तु होने के कारण वह हमारे लिए रुचिकर हो जाती है। उपन्यास को पढ़ने से ऐसा महसूस होना चाहिए कि इसमें वर्णित घटना हमसे जुड़ी हुई है, इसीलिए इसे उपन्यास की संज्ञा दी जाती है।

उपन्यास की कथा काल्पनिक घटनाओं पर आधारित होती है, परंतु उसमें यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति होती है। उपन्यास के पात्र और घटनाएं जीवंत और यथार्थवादी होते हैं। उपन्यास की कथावस्तु व्यक्ति के जीवन से जुड़ी होती हैं और तर्कसंगत होती हैं। प्रेमचंद स्वयं उपन्यास के संदर्भ में कहते हैं, "मैं उपन्यास को मानव-जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ।" प्रारंभिक उपन्यासों की कथावस्तु चमत्कार और तिलिस्म पर आधारित हुआ करती थी। नायक के चमत्कारिक कारनामों से जनता को आनंद की प्राप्ति होती थी। तिलिस्मी और जासूसी उपन्यास शुरुआत में काफी प्रसिद्ध हुए। रचनाकार अपने प्रतिपाद्य को घटना के माध्यम से ही पूरा कर लेता है।

आधुनिक काल में वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी के विकास के कारण जीवन के अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिले। मुद्रण और पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन और परिवहन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुआ। इस बदलाव के कारण गद्य की विभिन्न विधाओं पर इसका प्रभाव देखने को मिलता है। अब अधिक मात्रा में उपन्यास साहित्य रचा जाने लगा। अनेक भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से उपन्यासों विधा का प्रचार-प्रसार होने लगा। पत्र-पत्रिकाओं के विकास के कारण कहानी विधा का जन्म हुआ, जिससे उपन्यास की कथावस्तु में भी मूलभूत परिवर्तन देखने को मिलता है। उपन्यास का जन्म पश्चिम से माना जाता है। पाश्चात्य उपन्यासकारों ने उपन्यास विधा को नई दिशा दी, जिसके कारण उपन्यास विधा प्रसिद्ध होती गई और समय के साथ-साथ इसमें परिवर्तन भी होते गये। उपन्यास के संदर्भ में विचार-विमर्श किया गया कि उपन्यास क्या है, व्यक्ति के जीवन में इसका क्या संबंध है।

यदि उपन्यास की तुलना कहानी से करें, तो पाएंगे कि उपन्यास की तुलना में कहानी का आकार छोटा होता है। उपन्यास में जीवन का व्यापक चित्रण होता है, जबकि कहानी में जीवन के किसी एक पक्ष, घटना अथवा काल का वर्णन होता है। उपन्यास में कहानी की अपेक्षा पात्र भी अधिक होते हैं।

प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' का आकार 'निर्मला' उपन्यास से काफी छोटा है। यह अंतर किस आधार पर है? 'पूस की रात' में केवल एक घटना का वर्णन किया गया है–कहानी का मुख्य पात्र हल्कू किसान साहूकार का कर्जदार है। सारी कहानी हल्कू के आस-पास ही घूमती है। प्रेमचंद का 'निर्मला' उपन्यास उनके अन्य उपन्यासों की तुलना में इस उपन्यास की कथावस्तु का कलेवर काफी छोटा है। उपन्यास और कहानी में मूलभूत अंतर केवल आकर की दृष्टि में ही नहीं, बल्कि संरचनागत दृष्टि में भी इन दोनों विधाओं में अंतर पाया जाता है। उपन्यास में निम्न तत्वों का वर्णन होता है।

कथावस्तु

कथावस्तु से तात्पर्य उपन्यास में वर्णित घटना क्रम से होता है, उसे ही कथानक कहा जाता है। इसके अंतर्गत वर्णित घटनाओं का विस्तृत चित्रण किया जाता है। प्रासंगिक घटनाओं का वर्णन भी इसमें किया जाता है। वर्णन करने की दृष्टि से उपन्यासकार को किसी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रकार की बंदिश नहीं होती है। उपन्यास का कथानक क्रमबद्ध होना चाहिए, ताकि कथानक में अस्वभाविकता का खतरा पैदा न हो अर्थात एक प्रसंग का दूसरे प्रसंग से संबंध होना चाहिए। कथानक के प्रसंग का विस्तारपूर्वक वर्णन उपन्यास में किया जाता है। काल्पनिक और अवास्तविक घटनाओं का चित्रण उपन्यास में नहीं होना चाहिए। अन्यथा उपन्यास पाठक में कौतूहल का भाव पैदा करने में समर्थ नहीं हो पाता है। आधुनिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन से जुड़ी घटना को कथानक में स्थान दिया जाता है। आरंभिक उपन्यासों में कथानक क्रमबद्ध होता था, परंतु आज के उपन्यासों में किसी भी घटना से उपन्यास की शुरुआत की जा सकती है।

चरित्र चित्रण

उपन्यास में पात्रों की संख्या की कोई सीमा नहीं होती है, किंतु कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होती है। उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होने के साथ-साथ एक से अधिक पात्र महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह भी करते हैं। चरित्र प्रधान उपन्यासों में प्रमुख पात्र के आस-पास ही कथाकन घूमता है। जिस प्रकार 'निर्मला' उपन्यास में निर्मला ही प्रमुख पात्र है और उपन्यास का कथानक निर्मला के जीवन पर आधरित है। उपन्यास की समस्त घटनाओं का ताना-बाना निर्मला के आस-पास ही घूमता है। किसी भी उपन्यास में चरित्र के चरित्रांकन के लिए व्यापक समय रहता है अर्थात पात्र के जीवन की छोटी-से-छोटी विशेषता को उद्घाटित करने का अवसर उपन्यास के अंदर रहता है। जिस तरह उपन्यास में व्यक्ति के मनोभावों के आत्मसंघर्ष को रचनाकार कथानक के रूप में स्वीकार करता है। उसमें चरित्र के विकास का विस्तृत समय रहता है। उदाहरण के रूप में, प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' के प्रमुख पात्र होरी को ले सकते हैं, जो भारतीय कृषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार जैनेन्द्र के उपन्यासों में व्यक्ति के अंतर्द्वन्द्व को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उपन्यासकार अपने उपन्यासों में व्यक्ति के मनोभावों का सूक्ष्म अंकन करता है। उसके पात्र कथानक में विश्वनीय प्रतीत होते हैं।

परिवेश

परिवेश का तात्पर्य है कि उपन्यास में जिन घटनाओं का वर्णन किया जाता है, वे घटनाएं किस काल से, देश और किस स्थान से संबंधित हैं। परिवेश के अंतर्गत इस प्रकार की समस्त जानकारी प्रस्तुत की जाती है। जिस काल का उपन्यासकार अपनी रचना में वर्णन करता है, उसे उस काल का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक होता है। तभी वह रचना के साथ न्याय कर पाता है, क्योंकि जानकारी के अभाव में रचना में अस्वाभ ाविकता आ जाती है। अगर रचना में जीवन का यथार्थ अंकन नहीं होगा, तो पाठक को रचना पढ़ने में अरुचिकर लग सकती है। यदि उपन्यासकार कथावस्तु को ग्रामीण जीवन के आधार पर प्रस्तुत करता है, तो उसे ग्रामीण जीवन के परिवेश की जानकारी होना आवश्यक है, क्योंकि जब तक रचनाकार उस परिवेश का पूरी सूक्ष्मता और गहनता के साथ अध्ययन नहीं कर लेता, तब तक वह यथार्थ चित्रण की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। अन्यथा रचना में बनावटीपन आ जाएगा।

कथावस्तु का संबंध किसी कालखंड और समय विशेष से जुड़ा होता है। रचनाकार को उस कालखंड की उचित जानकारी आवश्यक होती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कथावस्तु किसी काल विशेष से जुड़ी है, तो उस काल की विशेषताओं का ज्ञान रचनाकार के लिए जरूरी होता है। यदि रचनाकार गुप्तकाल से जुड़ा है, तो उस कालखंड की जानकारी आवश्यक होती है।

संरचना शिल्प

संरचना शिल्प से अभिप्राय उपन्यास की शैली से लिया जाता है। उपन्यास में किस प्रकार की भाषा और संवादों का उपयोग किया गया है, कुछ उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद कुछ अंतर देखे जा सकते हैं, क्योंकि प्रत्येक उपन्यासकार की रचना- शैली अलग होती है। उपन्यास की रचना करने का ढंग भी अलग होता है। अपनी योग्यता के आधार पर वह भाषा और संवाद योजना को अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करता है।

शैली–शैली से अभिप्राय रचना लिखने के ढंग से लिया जाता है। उपन्यासकार की व्यक्तिगत रुचि और विषयवस्तु के कारण ही शैली में बदलाव देखने को मिलता है। रचनाकार जिस तरह से कथावस्तु को वर्णित करता है, उसके कारण शैली में परिवर्तन देखने को मिलता है। इसी रुचि के कारण ही कुछ रचनाकार मानव जीवन के बाह्य पहलू को उजागर करते हैं, तो कुछ मानव के मनोभावों को वर्णित करते हैं। यदि प्रेमचंद के उपन्यासों पर दृष्टिपात करें, तो ज्ञात होगा कि प्रेमचंद ने जीवन के बाह्य पक्ष को अपनी रचनाओं में उजागर किया है। सामाजिक जीवन का चित्रण करते समय वे कभी-कभी पात्रों की मनोदशाओं का भी बड़ा मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं, परंतु यथार्थ जीवन का चित्रण ही प्रेमचंद का मुख्य विषय है।

संवाद–संवाद से तात्पर्य है–उपन्यास में पात्रों आपस में वार्तालाप, जिसके कारण कथानक आगे बढ़ता है। ऐसे वार्तालाप को ही संवाद कहा जाता है। संवाद के माध्यम से कथावस्तु आगे बढ़ती है और पात्रों के चरित्र की विशेषताओं का भी आभास होने लगता है। यदि उपन्यास के पात्र शिक्षित हैं, तो उनके संवाद भी उसी आधार पर होने चाहिए। जिस परिवेश का पात्र होगा, उसी परिवेश पर आधारित संवाद कथावस्तु को रुचिकर बनाते हैं। प्रेमचंद के पात्रों के संवाद का उदाहरण द्रष्टव्य है–

ग्रामीण पात्र होरी–होरी ने अपने झुर्रियों से भरे माथे को सिकोड़कर कहा–"तुझे-रस पानी की पड़ी है, मुझे यह चिन्ता है कि सवेर हो गई तो मालिक से भेंट नहीं होगी।"

भाषा–भाषा के माध्यम से उपन्यासकार उपन्यास को रोचक बनाता है। उपन्यास की भाषा अगर सहज और पात्रानुकूल भाषा के उपयोग से पात्र जीवंत प्रतीत होते हैं। कई बार रचनाकार को पात्रों के अतिरिक्त अपनी तरफ से भी कुछ अभिव्यक्त करता है। ऐसी स्थिति में उपन्यासकार की भाषा थोड़ी भिन्न हो जाती है। भाषा को सरल और सहज बनाने के लिए प्रचलित शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों का उपयोग किया जाना चाहिए।

प्रतिपाद्य

प्रतिपाद्य से ताप्तर्य उपन्यासकार के उद्देश्य से लिया जाता है। उपन्यास में क्या वर्णित किया गया है और क्यों कहा गया है, उसे ही उद्देश्य कहा जाता है। उपन्यासकार के उद्देश्य को जानने से पहले यह जरूरी हो जाता है कि उपन्यास को ठीक से समझें। उसके बाद उसमें दिये गये संदेश को समझें। उस संदेश की सामाजिक और साहित्यिक समीक्षा के आधार पर हम यह जान सकते हैं कि उपन्यासकार ने जिस संदेश को अभिव्यक्त किया है, वह कितना सही है और पाठकों पर उसका कितना प्रभाव पड़ेगा। हर रचना का अपना एक उद्देश्य होता है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उपन्यास के भेद

उपन्यास के तत्व सभी उपन्यासों में पाये जाते हैं, परंतु ये तत्व समस्त उपन्यासों में भिन्न स्थितियों में पाये जाते हैं। किसी उपन्यास की कथावस्तु में घटना की प्रमुखता होती है, तो किसी उपन्यास में पात्रों पर विशेष बल दिया जाता है। किसी उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन करना महत्त्वपूर्ण होता है, तो कोई उपन्यासकार कल्पना को माध्यम बनाता है। किसी उपन्यास में स्पष्ट वर्णन को ही महत्त्व दिया जाता है।

कथावस्तु के आधार पर

उपन्याय की कथावस्तु एक-दूसरे से भिन्न होती है। किसी का संबंध पौराणिक घटना से होता है और किसी का सामाजिक यथार्थ से संबंध होता है, तो किसी का इतिहास से संबंध होता है। इस प्रकार आधुनिक उपन्यास को कथानक में सामाजिक जीवन के यथार्थ और परिवार को केन्द्र में रखकर भी उपन्यास की रचना की जा सकती है। हर उपन्यास की रचना का ढंग उपन्यास की विषयगत रुचि के आधार पर होता है। उपन्यासों को कथानक के आधार पार निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है–

1. ऐतिहासिक उपन्यास–ऐतिहासिक उपन्यासों की कथावस्तु इतिहास से संबंधित होती है। इस प्रकार के उपन्यास में रचनाकार के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह इतिहास से जुड़ी किसी घटना को अपने उपन्यास की कथावस्तु बनाए, अपतिु वह अपनी कल्पना शक्ति के बल पर कथानक का निर्माण कर सकता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में तत्कालीन जीवन की समस्याओं को ऐतिहासिक घटना के आधार पर वर्णित किया जाता है। उदाहरणस्वरूप, हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' को लिया जा सकता है।

2. परिवारिक उपन्यास–उपन्यासकार जिस उपन्यास में किसी परिवार विशेष की घटना का वर्णन करता है, उस कथानक को पारिवारिक उपन्यास कहा जाता है, क्योंकि परिवार समाज की इकाई होती है। परिवार का संबंध समाज से होता है। अत: ऐसे उपन्यासों को सामाजिक उपन्यासों की श्रेणी में भी रख सकते हैं। उदाहरण के दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' को लिया जा सकता है। इसमें परिवार से जुड़ी समस्या को कथावस्तु का आधार बनाया गया है। समस्त घटनाचक्र निर्मला के पारिवारिक जीवन के आस-पास ही घूमता है।

3. सामाजिक उपन्यास–उपन्यासकार अपने उपन्यास की कथावस्तु को किसी सामाजिक समस्या को लेकर रचता है, जो ऐसे उपन्यास सामाजिक उपन्यास कहे जाते हैं। मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास 'सेवासदन' और 'निर्मला' दोनों सामाजिक उपन्यास की श्रेणी में आते हैं।

4. पौराणिक उपन्यास–उपन्यासकार जिस उपन्यास में कथानक का आधार किसी पौराणिक घटना को बनाता है, वह उपन्यास पौराणिक उपन्यास कहलाता है। ऐतिहासिक उपन्यासों की तरह इसमें उपन्यास का कथानक तो पौराणिक होता है, लेकिन उपन्यासकार का उद्देश्य आधुनिकता लिये हुआ होता है। हजारीप्रसाद द्विवेदी का प्रसिद्ध उपन्यास 'अनामदास का पोथा' इसी श्रेणी का उपन्यास माना जाता है।

5. घटना प्रधान उपन्यास–उपन्यासकार जिस उपन्यास में किसी विशेष घटना को आधार बनाकर उपन्यास के कथानक को रचता है, वह उपन्यास घटना प्रधान कहलाता है। इस तरह के उपन्यास में कथानक के प्रति रुचि घटना के विकास से जुड़ी होती है। जितनी अधिक घटनाओं का वर्णन उपन्यास में होता है, उससे पाठक को उपन्यास पढ़ते हुए निरंतर जिज्ञासा का भाव बना रहता है कि अब आगे क्या होगा? आरंभिक उपन्यास जैसे जासूसी, तिलिस्मी आदि इसी कोटि में आते हैं। देवकीनंदन खत्री के उपन्यास 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' का उल्लेख किया जा सकता है।

6. भाव-प्रधान उपन्यास–जिन उपन्यासों की कथा का आधार भावनात्मक संघर्ष पर आधारित हो, ऐसे उपन्यास भाव- प्रधान उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं। इस तरह के उपन्यास की कथावस्तु में पात्रों के मन में उभरने वाले भावों का वर्णन किया जाता है। जैनेन्द्र इस कोटि के रचनाकार हैं। उनके द्वारा रचित उपन्यास 'सुनीता' इसी श्रेणी में आता है।

चरित्र-चित्रण के आधार पर

उपन्यासकार जहां उपन्यास के किसी मुख्य चरित्र को आधार बनाकर कथानक का विकास करता है, ऐसे उपन्यास चरित्र-प्रधान कहलाते हैं। उदाहरण के रूप में 'निर्मला' उपन्यास की प्रमुख पात्र निर्मला को लिया जा सकता है। उपन्यास की समस्त घटनाएं निर्मला के जीवन से जुड़ी हुई हैं। प्रासंगिक कथाएं भी निर्मला के चरित्र को ही विकसित करती हैं। उपन्यासकार चरित्र-प्रधान उपन्यास में मुख्य पात्र और अन्य पात्रों के चरित्र को चित्रित करने के लिए उनकी चारित्रिक विशेषताओं को भी उद्घाटित करता है। चरित्र-प्रधान उपन्यासों में पात्रों के बाह्य संघर्ष के साथ-साथ उनके अंतर्मन के संघर्ष का भी विस्तार से वर्णन किया जा सकता है। जैनेन्द्र, अज्ञेय आदि के उपन्यास इसी श्रेणी में आते हैं।

परिवेश के आधार पर

उपन्यासकार परिवेश के आधार पर भी अपनी रचना को रचता है। प्रत्येक उपन्यास का अपना कोई-न-कोई परिवेश होता है, परंतु जिस उपन्यास में अन्य तत्वों की अपेक्षा परिवेश को प्रमुखता दी जाती है, उसे परिवेश प्रधान उपन्यास की श्रेणी में रखा जा सकता है। रचनाकार जिस परिवेश का वर्णन करता है, उसकी समस्त जानकारी का ज्ञाता होने के कारण उसकी संपूर्ण विशेषताओं को वह उपन्यास में वर्णित करता है। आंचलिक उपन्यासों को इस कोटि में रखा जा सकता है, क्योंकि उनमें एक अंचल विशेष का संपूर्ण वर्णन किया जाता है। उदाहरण की दृष्टि से, फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' को इस श्रेणी में लिया जा सकता है। इस उपन्यास में बिहार के पूर्णिया जिले की आंचलिकता का व्यापक वर्णन किया गया है। परिवेशगत होने के कारण उपन्यासों को शहरी, कस्बाई, ग्रामीण आदि विभिन्न श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

शैली के आधार पर

उपन्यासकार जिस ढंग से उपन्यास की रचना करता है, उसे शैली कहा जाता है अर्थात उपन्यास लिखने का तरीका शैली है। आरंभिक उपन्यासों में उपन्यास लिखने का भी एक ढंग हुआ करता था, जैसे–उपन्यास का आरंभ, मध्य और अंत; परंतु आज के समय में ऐसा कुछ नहीं है। वर्तमान समय में उपन्यास लिखने की कई शैलियां उभरकर सामने आई हैं। अगर उपन्यासकार किसी कथानक को पात्र के द्वारा कहलाता है, तो उसे आत्मकथात्मक शैली का उपन्यास कहा जाता है। जैसे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' इसी प्रकार का उपन्यास माना जाता है। इस तरह जैनेन्द्र का 'त्यागपत्र' उपन्यास का कथानक पत्र के द्वारा वर्णित किया गया है, तो उस उपन्यास में पत्र शैली का प्रयोग हुआ है। जहां

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रतीकों के माध्यम से कथानक का वर्णन हो, वहां प्रतीकात्मक शैली और जहां लोकथा को आधार बनाकर कथावस्तु लिखी जाए, उसे लोककथात्मक शैली का उपन्यास कहा जाएगा। कई उपन्यासों में मिश्रित शैली का प्रयोग भी उपन्यासकार करता है।

प्रतिपाद्य के आधार पर

इस तरह के उपन्यासों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक उपन्यासकार के दृष्टिकोण के आधार पर और दूसरा उद्देश्यपरक दृष्टि से। उपन्यासकार की दृष्टि दो तरह की हो सकती है–आदर्शोन्मुख यथार्थवादी अथवा यथार्थवादी। रचनाकार जब किसी आदर्श को प्रस्तुत करने के लिए उपन्यास की रचना करता है, तो उसे आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास कहा जाता है। प्रेमचंद के आरंभिक उपन्यास इसी कोटि में आते हैं। आदर्श से हटकर जीवन के यथार्थ को जब उपन्यासकार प्रस्तुत करता है, तो उस उपन्यास को यथार्थवादी उपन्यास कहा जाता है। ऐसे उपन्यासों में जीवन के यथार्थ का वर्णन प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास की कथावस्तु का आधार उपन्यासकार की रुचि पर भी आधारित होती है। अगर उपन्यासकार मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक हैं, तो उनकी कथावस्तु में मार्क्सवाद का अधिक पुट होगा।

यथार्थवादी दृष्टिकोण से ओत-प्रोत समाज के प्रति विचारधारा आलोचनात्मक होती है। इस प्रकार के उपन्यासकारों में यशपाल, नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त, भीष्म साहनी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ऐसे उपन्यासों को समीक्षक सामाजवादी यथार्थवादी श्रेणी में रखा जाता है। जिन उपन्यासों की कथावस्तु मनोवैज्ञानिक आधार पर हो, ऐसे उपन्यासों को मनोवैज्ञैनिक उपन्यास या फिर मनोविश्लेषणवादी उपन्यास कहा जाता है। इन उपन्यासों में व्यक्ति के अंतर्मन का विस्तृत वर्णन किया जाता है।

हिंदी उपन्यास का विकास

उपन्यास एक जटिल, मिश्रित और सतत् विकासमान विधा है। हिंदी उपन्यास का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। हिंदी में उपन्यास विधा का विकास पाश्चात्य प्रभाव के परिणाम के रूप में देखा जाता है। हिंदी का पहला उपन्यास श्रद्धाराम फुल्लौरी का 'भाग्यवती' सन् 1877 में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार पंडित गौरीदत द्वारा रचित 'देवरानी जेठानी की कहानी' जिसकी रचना 1870 ई. में हुई। हिंदी उपन्यास विधा की शुरुआत भारतेन्दु युग से मानी जाती है। सबसे पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने बांगला उपन्यासों का अनुवाद कर हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। भारतेंदु से प्रेरित होकर ही रचनाकार उपन्यास लेखन में प्रवृत्त हुए। हिंदी उपन्यास का पहला उपन्यास 'परीक्षा गुरु' को माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'परीक्षा गुरु' को हिंदी का पहला 'अंग्रेजी ढंग का नोवेल' कहा था। प्रेमचंद हिंदी साहित्य में उपन्यास सम्राट की उपाधि से विभूषित हुए। उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। उपन्यास में लेखक पाठक और जिस समाज में वे रहते हैं, उन सबकी संवेदनाओं का संश्लिष्ट रूप व्यक्त होता है। हिंदी उपन्यास विधा में समय के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। विकासक्रम की दृष्टि से उपन्यास को तीन विभाजित किया जा सकता है–

1. प्रेमचंद-पूर्व युग के उपन्यास,
2. प्रेमचंद युग के उपन्यास,
3. प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यास।

प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद-पूर्व काल के हिंदी उपन्यासों को प्रतिपाद्य के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–शुद्ध मनोरंजनपरक उपन्यास और सामाजिक सुधारवादी भावनापरक उपन्यास। मनोरंजन प्रधान उपन्यासों में जासूसी, तिलिस्मी और ऐय्यारी उपन्यास आते हैं। सुधारवादी उपन्यासों के अंतर्गत ऐतिहासिक उपन्यास आते हैं। तिलिस्मी, ऐय्यारी आदि उपन्यासों में प्रमुख उपन्यासकारों में देवकीनंदन खत्री ('चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति'), किशोरी लाल गोस्वामी ('तिलिस्मी शीश महल') और जासूसी उपन्यासकारों में गोपालराम गहमरी का नाम विशेष उल्लेखनीय माना जाता है। उनके उपन्यास 'अदभुत लाश', बेकसूर की फांसी' और 'सरकारी लाश' आदि उपन्यास जासूसी उपन्यासों की कोटि में आते हैं।

इस तरह के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन हुआ करता था। पाठक इन उपन्यासों को बड़ी रुचि के साथ पढ़ते थे। कथावस्तु में विचित्र घटनाओं की भरमार इन उपन्यासों में होती थी और तिलिस्मी घटनाओं के अतिरिक्त प्रेमकथाओं को भी इसमें स्थान दिया जाता था। सामाजिक सुधारवादी भावनापरक उपन्यासों में तत्कालीन समय की सामाजिक स्वभाविकताओं का व्यापक वर्णन किया जाता है। उपन्यासकार अपनी रचना के द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के उपायों का वर्णन करता है। उद्देश्यपरक होने के कारण इन उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने की प्रवृत्ति विकसित हुई। इस प्रकार के उपन्यासों में लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु', राधाकृष्णदास का 'निस्सहाय हिंदू' और बालकृष्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान' आदि मुख्य उपन्यास हैं। प्रेमचंद पूर्व युग के उपन्यासों में मनोरंजन की प्रधानता पाई जाती है, परंतु भाषिक दृष्टि से प्रौढ़ता प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में ही देखने को मिलती है।

प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास

हिंदी उपन्यास विधा में प्रेमचंद के पदार्पण से नवीन युग की शुरुआत हुई। उपन्यास में जीवन के यथार्थ को चित्रित करने का कार्य इसी युग में शुरू हुआ। सबसे पहले प्रेमचंद अपने उपन्यासों में आदर्शवाद की स्थापना करते हैं। फिर धीरे-धीरे उनके उपन्यासों की कथावस्तु यथार्थ से युक्त हो गई, जिसकी शुरुआत उनके उपन्यास 'सेवासदन' (1918) में देखने को मिलती है। इस उपन्यास में सामाजिक समस्या को उठाया गया है। समाज के अत्याचारों से दु:खी स्त्री समाज और वेश्यावृत्ति को कथावस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास–'प्रेमा' (1907), 'सेवासदन' (1918), 'वरदान' (1920), 'प्रेमाश्रम' (1922), 'रंगभूमि' (1925), 'कायाकल्प' (1926), 'निर्मला' (1927), 'गबन' (1931), 'कर्मभूमि' (1928), 'गोदान' (1936), 'मंगलसूत्र (अधूरा)' उपन्यास 1948 में प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों ने भी समाज के यथार्थ को चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। इन उपन्यासकारों में प्रमुख रूप से विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' (भिखारिणी), पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (बुधुवा की बेटी, शराबी) आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

जशंकर प्रसाद ने भी प्रेमचंद युग में दो उपन्यासों की रचना की है, जिनमें 'कंकाल' और 'तितली' उपन्यासों में प्रसाद ने सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है, परंतु रचनाकार की वर्णन शैली में

www.neerajbooks.com